ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर। सामवेद 971
हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर। O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotces.

वर्ष 37, अंक 41 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 सितम्बर, 2014 से रविवार 5 अक्तूबर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

विदेश समाचार

अमेरिकी क्षेत्र में आर्यसमाज की विस्तार की भावना के साथ

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का 24वां महासम्मेल सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का चौबीसवाँ आर्य महा सम्मेलन जुलाई ३१- अगस्त ३, २०१४, सैडलब्रूक, न्यू जर्सी स्टेट, मैरियट होटल, अमेरिका में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में अमेरिका, कनाडा और भारत से आये लगभग 300 आर्यजनों ने भाग लिया, जिसमे ८८ युवा सदस्य थे। सभा के संस्थापक सदस्य एवं न्यासी, उपस्थित थे। हिंदू यूनिवर्सिटी ऑर्लैंडो फ्लोरिडा के अध्यक्ष श्री ब्रह्म रतन अग्रवाल इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्री सुरेशचन्द्र जी अग्रवाल विशेष रूप से भारत से पधारे थे।

इस वार्षिक आर्य महासम्मेलन के पूर्व निर्धारित विषयानुसार, वेदों में विज्ञान, आध्यात्मिकता और शारीरिक स्वास्थ्य से संबंधित भाषण, विचार और चर्चाएं हुई। पूरा कार्यक्रम आठ सत्रों में विभक्त था। सभी सत्र परस्पर संवादात्मक थे जिसमें प्रतिभागियों को प्रश्नोत्तर के अवसर भी प्रदान किये गए। वक्ताओं ने अपने हिंदी एवं आंग्ल भाषा के अपने सारगर्भित उद्‌बोधनों के माध्यम से इस बात को सिद्ध किया कि वेद ही ज्ञान-विज्ञान (सृष्टि विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, योगविज्ञान, प्राणीविज्ञान, भौतिकविज्ञान, यज्ञविज्ञान इत्यादि) के मूल स्रोत हैं।

४ दिन के सम्मेलन में, प्रतिदिन योग-ध्यान, वैदिक अग्निहोत्र, विभिन्न वक्ताओं द्वारा प्रस्तुतियाँ, मनोरंजक सांस्कृतिक कार्यक्रम, और आयुर्वेदिक

सम्मेलन के उद्‌घाटन के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते स्वामी प्रणवानन्द जी, अमेरिका सभा के प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता एवं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी एवं अन्य अधिकारीगण। समापन समारोह के अवसर पर उपस्थित आर्यजन।

समर्पित कार्यकर्त्ता एवं आर्यसमाज की गणमान्य विभूति, आर्यपथिक गिरीश चन्द्र खोसला वानप्रस्थ ने सम्मेलन में सभी उपस्थित महानुभावों का स्वागत किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक, डॉ राजिंदर गांधी, श्री देव महाजन, श्री भूषण वर्मा, श्री जोगिन्दर कुंद्रा आदि समेत अनेकानेक संरक्षक एवं मार्गदर्शक परामर्श की व्यवस्था थी। युवाओं के सत्र अलग से आयोजित थे, यह सत्र अधिक संवादात्मक एवं मुख्यतया आंग्ल भाषा में थे। अमेरिका की आर्यसमाजों के इस वार्षिक आयोजन में निम्नलिखित विद्वानों एवं आचार्यों ने विभिन्न वैदिक विषयों पर सबका मार्गदर्शन किया। स्वामी प्रणवानन्द

– शेष पृष्ठ 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में गुरुकुल कांगड़ी में

तीन दिवसीय कार्यकर्त्ता गोष्ठी सम्पन्न

सैद्धान्तिक एवं सांगठनिक पक्ष की मजबूती के लिए महत्त्वपूर्ण निर्णय

विस्तृत समचार एवं चित्र अगले अंक में

सम्पादकीय

"नवरात्र पर्व का वास्तविक स्वरूप"

भारत वर्ष एक धर्म प्रधान राष्ट्र है यहाँ कि संस्कृति धर्म से जुड़ी हुई है। जिसमें अनेक मत-मतान्तरों का भी विनिवेश हुआ है। भारतीय संस्कृति पूर्णत: वैदिक संस्कृति है। किन्तु कालान्तर में इस संस्कृति में अशुद्ध संस्कारों का समावेश हुआ। जिसमें भारत परतन्त्र तो हुआ दी अपितु प्रत्येक दशा में देश का पतन हुआ जिसका मुख्य कारण अविद्या और अज्ञान, अथवा वैदिक शब्दार्थ का अन्यार्थ किया जाना। जहाँ वैदिक शब्दकोश की अविद्वान् लोगों ने गलत दृष्टिकोण से व्याख्या की और वह अनर्थ ही समाज में एक परम्परा बन गई और अनेक अवैदिक परम्पराओं का प्रचलन बढ़ गया जिनमें से एक परम्परा नवरात्रों की परम्परा भी है। जो आश्विन शुक्ल/प्रतिपदा से-नवमी तक चलता है जिसमें लोग उपवास रखकर तथाकथित भगवती देवी के नौ रूपों की परिकल्पना कर मूर्ति को नौ दिनों तक भोग लगाना ही पूजा अर्चना समझते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारत वर्ष पर ही नहीं सम्पूर्ण संसार पर यह ऋण है जिन्होंने वेदों को पुन: उसके वास्तविक रूप में सर्व सुलभ बनाया और 'पारसमणि' रूपी वेदार्थ को सत्य अर्थ में प्रकाश किया। जो इन रूढ़ि परम्पराओं का खण्डन तो करती ही है लेकिन उसके मूल को वैदिकता से अवश्य जोड़ती है।

महर्षि ने तर्पण, श्राद्ध, नवरात्रि, (दूर्गापूजा) व्रत, उपवास इन सभी रूढ़ परम्पराओं के स्थान पर श्रेष्ठ विशुद्ध वैदिक परम्परा पंच महायज्ञ के रूप में प्रस्तुत की है, जो प्रत्येक सद् गृहस्थ (मनुष्य) के लिए जीवन पर्यन्त कर्त्तव्य है केवल नौ दिनों तक ही नहीं जिसका वैज्ञानिक विवेचन कुछ इस प्रकार है।

प्रथमत: भारतवर्ष षट् ऋतुओं का देश हैं, जैसे-ऋतुएँ बदलती है तो उसके अनुसार मानव की खान-पान-रहन सहन की सभी परिस्थितियाँ प्रभावित होती है। जिस पर आयुर्वेद के आचार्य चरक जी कहते है-

"**ऋत् भुक् मित भुक् हित भुक्**" अर्थात् मनुष्य को ऋतु के अनुसार हितकारी और अल्प आहार लेना चाहिए जिससे शरीर निरोग रहे। क्योंकि प्रत्येक रोग जीव के खान-पान पर निर्भर करता है जिसमें परिसंचरण तन्त्र (Digestive System) प्रभावित होता है। जब आर्यावर्त्त में पूर्ण वैदिक परम्पराएँ विद्यमान थी, उस समय वर्षाकाल में चातुर्मास [**आषाढ़-श्रावण-भाद्रपद्-आश्विन**] की एक अवधि में किसान कृषि कार्य से निवृत्त होते थे, व्यापारी यात्राओं से विराम पाते थे और क्षत्रिय अपने युद्ध कौशल से उपविराम होते थे, तो उस समय में विद्वान पुरोहित यज्ञों का अनुष्ठान रखते थे और ऋषि मुनि भी अरण्य से ग्राम (नगर) की ओर आकर वेदोपदेश में संलग्न रहते थे। और आश्विन

– शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

आचार्य कैसी शिक्षा दे

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

माहिर्भूर्मा पृदाकुर्नमस्तऽआतानानर्वा प्रेहि। घृतस्य कुल्याऽउपऽऋतस्य पथ्याऽअनु।। यजुर्वेद : ६/१२

अर्थ—हे शिष्य! तू **(माहिर्भूः)** सर्प के समान हिंसक और कुटिल आचरण वाला मत बन **(मा पृदाकुः)** न ही व्याघ्र के समान हिंसक या अजगर के समान दूसरे की धन-सम्पत्ति को हड़पने वाला बन। जैसे **(अनर्वा)** बिना घोड़े आदि साधनों के भी साहसी जन **(घृतस्य कुल्या उप)** जल की धाराओं को पार कर जाते हैं, वैसे ही तू **(प्रेहि)** स्वावलम्बी होकर आगे बढ़ और अपनी यश-कीर्ति को **(ऋतस्य पथ्या अनु)** सत्यमार्ग पर चलते हुये **(आतान)** विस्तृत करो **(नमस्ते)** फिर देखना सांसारिक जन तेरा कैसा सत्कार करते हैं।

महर्षि दयानन्द जी स्वमन्तव्यामन्तव्य में शिक्षा को परिभाषित करते हुये कहते हैं—'शिक्षा जिससे विद्या, सभ्यता, धर्मात्मा, जितेन्द्रियतादि की बढ़ती होवे और अविद्यादि दोष छूटें उसको शिक्षा कहते हैं।' यहाँ शिक्षा से अभिप्राय है कि विद्यालय में आचार्य एवं गुरुजन बालकों को सभ्य, शिष्ट, अनुशासित और संयमी तथा स्वावलम्बी बनाने की शिक्षा दें। विद्या किसी एक विषय के ज्ञान को कहते हैं। विद्या शिक्षा का ही एक भाग है। विद्वान् सभी नहीं बन सकते परन्तु धर्मात्मा सभी बन सकते हैं इसलिये शिक्षा का अधिक महत्त्व है। मन्त्र में दो दुर्गुणों का त्याग और दो गुणों को धारण करने का उपदेश दिया है।

१. माहिर्भूः—सर्प के समान कुटिलगामी मत बन। जिसकी कथनी और करनी में अन्तर है, जो छली-कपटी है, जो कहता कुछ है और करता कुछ है तथा हर समय कुटिलता का व्यवहार करता है, उससे सब भयभीत और आशंकित रहते हैं कि अमुक व्यक्ति विश्वास करने योग्य नहीं है। वह पता नहीं कब सर्प के समान अपने विषदन्तों से आहत कर दे, क्योंकि भिड़, ततैये, बिच्छू की पूंछ में विष होता है और सर्प के मुख में, परन्तु खल की रग-रग में विष रहता है। सभी दुर्गुणों के मूल में असत्य व्यवहार अर्थात् झूठ बोलना पाया जाता है। बालकों को विद्यालय में आचार-विचार की ऐसी शिक्षा दी जाये कि वे सरल, सत्यवादी और सादा जीवन बनायें।

२. मा पृदाकुः—(पर्द कुत्सिते शब्दे) अजगर या व्याघ्र की फुंकार और गर्जना बड़े-बड़े लोगों के धैर्य को विचलित कर देती है। जो लोग दूसरों को डराने या मारने की धमकी देते हैं वे पृदाकु-सम जानने चाहियें। इसी भाँति अजगर अपने शिकार को समूचा ही निगल जाता है। जो लोग दूसरों की धन-सम्पत्ति को येन-केन-प्रकारेण हड़पने का षड्यन्त्र करते हैं वे सब अजगर-वृत्ति वाले हैं। मन्त्र कहता है—हे मानव! तू सर्प के समान टेढ़ी चाल और अजगर के समान किसी की सम्पत्ति को हड़पने वाला मत बन।

३. अनर्वाप्रेहि—घोड़े एवं आजकल की मोटर गाड़ियाँ आदि आवागमन को सुगम बना देती हैं इसमें सन्देह नहीं। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सभी कार्य वाहनों द्वारा ही किये जायें। जीवन में ऐसे अवसर भी आते हैं जब व्यक्ति को अकेला ही आगे बढ़ना चाहिये। महाराजा रणजीत सिंह सेना लेकर विद्रोहियों को दबाने जा रहे थे। आगे अटक नदी आ गई जिसे देख घोड़े ठिठक कर रह गये। हुजूर अब क्या किया जाये? सैनिकों द्वारा यह कहे जाने पर महाराजा रणजीत सिंह आगे बढ़े और 'जिसके मन में अटक है वो ही अटक रहा' यह कहते हुए अपना घोड़ा नदी के प्रवाह में डाल दिया। उनकी देखा-देखी दूसरे सैनिक भी साहस जुटा कर आगे बढ़े और बिना किसी बाधा के नदी को पार कर लिया।

जीवन में स्वावलम्बन का बहुत महत्त्व है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर कहते हैं—''यदि तोर डाक (पुकार) सुने कोई न आशे। तबे एकला चलो रे एकला चलो रे एकला चलो रे।''

४. ऋतस्य पथ्या अनु—मन्त्र में सत्यपथ पर निरन्तर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है। निस्सन्देह इस पथ पर चलना सरल नहीं है। लोग पग-पग पर हतोत्साहित करते हैं और बाधा पहुँचाते हैं परन्तु उनकी चिन्ता न करते हुए जो अपने पथ पर आगे बढ़ता चला जाता है, विजयश्री उसी का वरण करती है और सत्य का विजय होता है।

अचल रहा जो अपने पथ पर
लाख मुसीबत आने में।
मिली सफलता जग में उसको
जीने में मर जाने में॥
खड़ा हिमालय बता रहा है
डरो न आंधी पानी में।
खड़े रहो अपने पथ पर
सब कठिनाई तूफानी में॥

(सोहनलाल द्विवेदी)

परमात्मा स्वयं सत्यस्वरूप है अतः सत्य और धर्मपथ के पथिक की वह सहायता करता है। आचार्य शिष्य को ऐसा बनाये कि विपत्ति के समय वह अपने साहस के साथ आगे ही आगे बढ़ता जाये।

अगले मन्त्र में कहा है—

वाचं ते शुन्धामि प्राणं ते शुन्धामि चक्षुस्ते शुन्धामि श्रोत्रं ते शुन्धामि।

नाभिं ते शुन्धामि मेढ्रं ते शुन्धामि पायुं ते शुन्धामि चरित्राँस्ते शुन्धामि॥

यजुः० ६.१४

हे शिष्य! मैं विविध शिक्षा एवं सदाचरण के अभ्यास द्वारा तेरी **(वाचम् शुन्धामि)** वाणी को शुद्ध करता हूँ। तेरे **(चक्षुः)** नेत्र **(नाभिम्)** नाभिस्थ वीर्य शक्ति, प्रजननेन्द्रिय, गुदा आदि सभी को शुद्ध करता हूँ **(चरित्राँस्ते शुन्धामि)** तेरे हाथ-पैर अर्थात् चालचलन को धर्मयुक्त बनाता हूँ।

शिक्षा का उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास और उसमें प्रसुप्त प्रतिभा का विकास करना है। यह तब होगा जब बालक की सभी ज्ञानेन्द्रियां एवं कर्मेन्द्रियाँ शुभ आचरण वाली हों तथा चारित्रिक विकास, धर्मानुकूल व्यवहार आदि की शिक्षा दी जाये। यथा—

वाणी की शुद्धि—शुद्ध उच्चारण, मधुर और सत्य बोलने तथा कम बोलने से होती है।

प्राण—प्राणायाम से सक्षम बनते हैं। सात्विक भोजन और संयम का जीवन प्राणों को ऊर्जा प्रदान करता है।

नेत्र—दूसरों की माता, बहिन, बेटी को अपनी माता, बहिन, बेटी के समान देखना और दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान जान उसकी इच्छा न करना तथा अपने समान दूसरों को भी सुख-दुःख होता है यह जानना।

कानों की शुद्धि—अश्लील वचन न सुनना, अपने दोष एवं दूसरे के गुणों का श्रवण तथा ईश्वर भक्ति के गीत-भजन सुनने से होती है।

नाभि से अभिप्राय नाभिस्थ वीर्यशक्ति को पवित्र रखना और उसे ऊर्ध्वरेता बनाने से है। सात्विक भोजन, व्यायाम, प्राणायाम, सुविचार और ईश्वरभक्ति से ब्रह्मचर्यपालन में बहुत सहायता मिलती है। मल-मूत्र के मार्गों की शुद्धि से वे अनेक रोगों से सुरक्षित रहते हैं।

हम जो कार्य करते हैं वे स्वभाव या आदत में परिणत हो जाते हैं। ये आदतें ही चरित्र कहलाती हैं। हाथ-पैरों को घृणित कार्यों से रोक उन्हें सेवा, सदाचरण तथा शक्ति वृद्धि में लगाना और सदाचार का पालन करने से चरित्र की पवित्रता बनी रहती है। कभी इन आचार्यों की छत्रच्छाया में शिक्षा प्राप्त करने के लिये देश-विदेश के छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिये आते थे और भारत विश्व का गुरु कहलाता था।

- *क्रमशः*

विवेचना

सब गड़बड़ झाला है!

24 सितम्बर के हिन्दुस्तान टाइम्स अखबार में कम्युनिस्ट नेता सीताराम येचुरी द्वारा लिखा लेख प्रकाशित हुआ जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की जातिवाद के विषय में मान्यता का विश्लेषण एवं मनुस्मृति पर जातिवाद का पोषण करने का आरोप लगाया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने हाल ही में कुछ पुस्तकों को प्रकाशित किया हैं जिनके माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया हैं कि जातिवाद, छुआछूत आदि कुप्रथा का हिन्दू समाज में प्रवेश उस काल में हुआ जब भारत पर मुस्लिम आक्रमणकारियों का राज था। इससे प्राचीन काल में छुआछूत का यहाँ के समाज में कोई स्थान नहीं था। येचुरी जैसे साम्यवादी विचारधारा को मानने वाले लोगो के लिए इस लेख में पुरानी घिसीपिटी बातों जैसे की प्रक्षिप्त मनुस्मृति के जातिवाद समर्थक कुछ श्लोक, पुरुष सूक्त की गलत व्याख्या, आर्यों का छद्म विदेशी आक्रमणकारी आदि को लिखना अपेक्षित है क्यूंकि उनके पास इसके अतिरिक्त और कुछ लिखने-कहने को हैं ही नहीं। मैंने इस लेख का शीर्षक सब गड़बड़ झाला हैं जानकर लिखा हैं क्यूंकि सत्य यह भी नहीं हैं जो संघ का विचार हैं और यह भी सत्य नहीं है जो येचुरी जैसे लोगो का मानना है। दोनों का उद्देश्य अपना अपना वोट बैंक सहेजने का अधिक लगता है। प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था मुख्य व्यवस्था थी जिसके अंतर्गत किसी भी व्यक्ति का उसके गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार उसका वर्ण निर्धारित किया जाता था। एक ब्राह्मण का पुत्र ब्राह्मण तभी कहलाता था जब वह ज्ञानवान हो, चरित्रवान हो, शुद्ध विचारों वाला एवं सात्विक कर्मों के द्वारा दूसरो का मार्गदर्शन करने की क्षमता रखता हो। एक क्षत्रिय का पुत्र तभी क्षत्रिय कहलाता था जब वह बलशाली हो, नेतृत्व की क्षमता रखता हो एवं राज्य की रक्षा करने के योग्य हो। एक वैश्य का पुत्र तभी वैश्य कहलाता था जब वह व्यापार आदि के माध्यम से राज्य की उन्नति करने के योग्य हो एवं इन सभी गुणों से विहीन व्यक्ति को शूद्र कहा जाता था और उसका कर्तव्य इन तीनों वर्णों का इनके कार्यों में सहयोग देना था। ब्राह्मण के पुत्र को गुणरहित होने से शूद्र वर्ण में रखा जाता था एवं शूद्र के पुत्र को गुणवान होने पर ब्राह्मण का वर्ण दिया जाता था। प्राचीनकालीन वर्णव्यवस्था बिना किसी भेदभाव के एवं राज्य द्वारा संचालित थी। कालांतर में वर्णव्यवस्था ने जातिवाद का स्थान ले लिया। एक ब्राह्मण का पुत्र अशिक्षित, दुर्व्यवसनी, चरित्रहीन होते हुए भी ब्राह्मण कहलाने लगा एवं एक शूद्र का पुत्र सुशिक्षित, गुणी एवं सात्विक होते हुए भी शूद्र कहलाने लगा। इस कारण से अनेक गुणवान व्यक्ति अपनी प्रतिभा का अवसर दिखाने से वंचित रह गए एवं अनेक गुणरहित व्यक्ति महत्वपूर्ण पदों पर बैठकर समाज का अहित करते रहे। इससे देश और समाज का जो अहित हुआ उसका आंकलन करना असंभव हैं। यह व्याधि अभी भी बनी हुई हैं। आज आरक्षण के नाम पर गुणों से रहित व्यक्ति को महत्वपूर्ण पदों पर बैठा दिया जाता हैं एवं गुणवान व्यक्ति भूखों मरता हैं। समस्या यह हैं की संघ को इस समस्या का समाधान मालूम नहीं हैं और येचुरी सरीखे लोगो से इसकी अपेक्षा रखना मूर्खता हैं। मध्य काल में कुछ मूर्खो ने मनुस्मृति में जातिवादी श्लोकों को मिश्रित कर दिया था जिनका प्रयोग जातिवाद को बढ़ावा देने के लिए किया गया था। गलत को गलत कहने में कोई बुराई नहीं हैं मगर उस गलती के लिए महर्षि मनु को कोसना कहाँ तक सत्य हैं। यही गलती अपनी राजनैतिक रोटियाँ सेकने के लिए येचुरी कर रहे हैं।

कुछ युवाओं के अपरिपक्व मस्तिष्क को सत्यता से अनभिज्ञ रखकर बरगला रहे हैं। आर्यो को बाहर से आया हुआ बतलाकर उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के मध्य मतभेद को बढ़ाना अंग्रेजों की पुरानी रणनीति थी जिसका अनुसरण येचुरी जैसे अवसरवादी नेता करते हैं। खेद हैं की इनका यथोचित उत्तर देने के स्थान पर संघ इस बीमारी का दोष मुस्लिम आक्रमणकारियों के सर मढ़ने का प्रयास कर रहा हैं । इस प्रयास से हमें संतुष्टि इसलिए नहीं हैं क्यूंकि दवा न मिलने से मर्ज यूँ का यूँ ही बना रहता हैं। इस समस्या का समाधान अगर पाना हैं तो स्वामी दयानंद की वैदिक विचारधारा से परिचित होना आवश्यक हैं। स्वामी दयानद के अनुसार गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार मनुष्य के वर्ण का निर्धारण चाहिये। इस सन्दर्भ में सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में स्वामी जी प्रश्नोत्तर शैली में लिखते हैं।

प्रश्न- जिसके माता-पिता अन्य वर्णस्थ (क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) हो क्या उनकी संतान

- *शेष पृष्ठ 6 पर*

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा वर्णित आर्यसमाज का निमय सं. 8

अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करनी चाहिए : एक चिन्तन

– प्रकाशआर्य

*टिप्पणी– विद्या प्राप्त करना ही मनुष्यपन का मुख्य लक्षण है विद्या के सहाय से ही व्यक्ति संसार की उलझनों को तो सुलझाता ही है अपितु संसार के दुःख रुपी जन्म–मरण के बंधन से भी छूट जाता है। यदि हम भौतिक ज्ञान (पुस्तकीय ज्ञान) प्राप्त करके भी अन्धविश्वास में जीते हैं तो वह अविद्या है, विद्या नहीं। महर्षि दयानन्द कहते है कि– **'जिसमें ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है। इसका नाम विद्या है।'** "विद्याविहीन पशुः" अर्थात् बिना विद्या के मनुष्य पशु के समान होता है केवल शरीर के बोझ को ढ़ोता रहता है। अतः विद्या से ही मनुष्य की शोभा होती है, विद्या से ही उसकी पहचान होती है इसलिए विद्या प्राप्ति के लिए पूर्ण मनोयोग से जीवन पर्यन्त प्रयास करना चाहिए। – **सम्पादक***

महर्षि दयानन्द का चिन्तन अति गहन, व्यापक, गंभीर, सूक्ष्म व सार्थक था। वे एक योगी और युगदृष्टा थे। इस विशेषता का कारण परमात्मा का शाश्वत और कल्याणकारी ज्ञान वेद उनके जीवन का आधार बना।

इसलिए महर्षि का दृष्टिकोण संकुचित न होते हुए समस्त मानव जाति को सुखी करने का था। जिन कारणों से मानव समाज दुःखी रहता है और इस अमृतमय जीवन को अभिशप्त कर लेता है, उससे मुक्ति पाने की राह महर्षि ने दिखाई।

आर्य समाज के स्वर्णिम 10 नियम संसार के अनेक ग्रंथों तपस्वी मनीषियों की भावना का सार हैं। ये कल्याणकारी नियम समस्त मानव मात्र के लिए हितकर है, इनका कोई भी व्यक्ति विरोध नहीं कर सकता। प्रत्येक नियम में मानव कल्याण का अमृत भरा है। निष्पक्ष भाव से संसार का कोई भी व्यक्ति किसी भी जाति सम्प्रदाय व देश का अनुयायी है, इन नियमों को पढ़े तो वह इनका समर्थक ही बन सकता है विरोधी नहीं।

इन्हीं नियमों को आर्य समाज का आधार माना गया, ये प्रत्येक श्रेष्ठ व्यक्ति को आत्मसात करने के लिए निर्मित किए गए। प्रत्येक नियम अपने आप में एक महत्वपूर्ण जीवनोपयोगी सन्देश देता है।

संक्षेप में यहां आर्य समाज के नियम क्रमांक 8 के संबंध में विचार किया जा रहा है।

इस समस्त संसार में मनुष्य का ही नहीं प्राणीमात्र का प्रयास व इच्छा सुख को प्राप्त करने की है। कोई भी किसी भी योनि का जीव धारी दुःख नहीं चाहता। परमात्मा की अमृतमयी इस सृष्टि का उपयोग–उपभोग करते हुए जीवन उन्नत करना, आनन्द और परम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना मानव जीवन द्वारा ही संभव है अन्य किसी योनि में यह संभव नहीं है। परन्तु संसार आज दुःखों, चिन्ताओं, परेशानियों के दल–दल में फंसते जा रहा है। यह क्यों? इसका कारण क्या है? यह कैसे दूर हो सकता है? इन प्रश्नों का स्थायी निदान महर्षि ने उपरोक्त नियमों में हमें दे दिया।

एक कुशल चिकित्सक किसी व्याधि का ईलाज (उपचार) करते समय पहले उन कारणों को रोकता है जिनसे व्याधि बढ़ती है या जो उसका कारण बने हैं। फिर उस पीड़ित व्यक्ति को क्या दवा लेना बताता है। उसी प्रकार महर्षि ने क्लेश और परेशानियों की जननी अविद्या को पहले दूर करने का उसका नाश करने का मार्ग दिखाया। क्योंकि दुःखों का क्लेश का सबसे पहला कारण अविद्या को ही बताया गया है। क्लेश के पांच कारण हैं–

अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश पंच क्लेशाः।

– योग दर्शन 2/3

अविद्या के कारण मनुष्य सत्य से भटक कर विपरीत पथ पर चलने लगता है, अविद्या के कारण संशय की स्थिति निर्मित हो जाती है। ज्ञान विहिन व्यक्ति की स्थिति गहन कोहरे में लुप्त पथ के समान होती है जिसे सामने रास्ता होने पर दिखाई नहीं देता। अज्ञान सत्य से दूर कर असत्य के समीप ले जाता है। अविद्या के संबंध में कहा गया –

अनित्याशुचि दुःखानात्मसु
नित्य शुचि सुखात्म ख्यातिरविद्या।

योग दर्शन 2/5

मनुष्य अज्ञानता के कारण अनित्य को नित्य और नित्य को अनित्य, अशुद्ध को शुद्ध और शुद्ध को अशुद्ध मानता है, तथा सुख में दुःख की व दुःख के कारणों में सुख की अनुभूति करता है, यही अविद्या है।

इस स्थिति में भ्रम में मनुष्य उलझ जाता है। "संशय आत्मा को, बुद्धि को प्रभावित कर दुविधा में डाल देता है।" योगीराज कृष्णचन्द्र जी बताते हैं "संशयात्मा विनश्यति" संशय से आत्मा का नाश होता है।

इस प्रकार अज्ञान युक्त किए गए कर्मो व विचारों का परिणाम विपरीत आता है, जो किए तो जाते हैं सुख के लिए, किन्तु प्राप्ति दुःखों की ही होती है। दुःखों के कारणों में अज्ञान सबसे पहला कारण है। पुनः कहा गया अज्ञान, अन्याय, अभाव, आलस्य दुःख के कारण है।

इस प्रकार जीवन की सार्थकता व उसका उद्देश्य अज्ञान (अविद्या) को नष्ट करके ही पूर्ण हो सकता है।

"**नियम का दूसरा भाग है विद्या की वृद्धि करना**" विद्या ही मानव चोले की पहचान है, इसके बिना इस अनमोल सर्वोत्तम योनि प्राप्त करने का कोई विशेष लाभ नहीं। जीवन में कई प्रकार से कई बातों को अर्जित किया जाता है अर्जित पदार्थ ही पूंजी कहलाता है, एक सफल मनुष्य को जीवन में क्या–क्या अर्जित करना चाहिए, इस श्लोक में कुछ ऐसा दर्शाया है :–

प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनं। तृतीये नार्जितं पुण्यं, चतुर्थे किं करिष्यति।।

यहां पर भी जीवन में सबसे पहले विद्या को अर्जित करने का ही महत्व दर्शाया है। क्योंकि विद्या विहीन मनुष्य की गणना तो पशु के समान की गई है :– राजा भर्तृहरी नीति शतक में लिखते हैं,

"येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्य लोके भूवि भार भूता, मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

जिसके जीवन में विद्या, तप, दान की प्रवृत्ति गुण, धर्म नहीं वह पशुवत है। विद्या को प्रथम स्थान दिया।

विद्या नाधिगता कलंकरहिता।
कानोऽयं परपिण्डलोलुपतया काकैरिव प्रेर्यते।।

– भर्तृहरि वैराग्य शतक श्लोक 43

जिसने दोष रहित पवित्र विद्या को प्राप्त नहीं किया, उसने पराया अन्न खाने के लालची कौवे के समान, मानव जीवन को व्यर्थ बरबाद कर दिया।

विद्या को कामधेनु कहा गया – कामधेनु की कल्पना का सन्दर्भ मनोवांछित प्राप्ति अर्थात् सब कुछ प्राप्त होना जाना जाता है।

क्रोधो वैवस्तो राजा, तृष्णा वैतरणी नदी। विद्या काम दुधः धेनू, संतोष नंदन वनम्।।

विद्या ही मनुष्य का हर स्थान का मित्र वह सहायक होती है –

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च। व्याधिस्तस्यौषधं मित्रं, धर्मो मित्रं मृतस्य च।।

विद्या से मानव जीवन में सबकुछ प्राप्त होता है, विद्या रूपी धन को कोई चुरा नहीं सकता, यही मनुष्य की शोभा है, इसी से राज्य में मनुष्य का सम्मान होता है, इसी से सुख व यश प्राप्त है, यही विदेश में मित्र के बन्धू समान सहयोगी होती है। विद्या विहीन व्यक्ति पशु है –

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकम् प्रच्छन्न – गुप्तं धनं, विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरूः।

विद्या बन्धुजनो विदेश गमने, विद्या परा देवता, विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्या विहीनः पशुः।

– नीति शतक श्लोक 19

इसलिए परमात्मा से गायत्री महामन्त्र में धियो योनः प्रचोदयात् मन्त्र से सत्य ज्ञान की प्रार्थना की जाती है। एक सफल जीवन जीने के लिए वेद में बताया गया –

विद्यां चाऽविद्यां च यस्तद्वेदोभय ‍सहः। अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽ मृतमश्नुते।। यजुर्वेद 40/14

जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साथ ही साथ जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से मृत्यु को तरके विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है। इस प्रकार महर्षि ने संसार को सुखी रहने का सूत्र आर्य समाज के 8 वें नियम में दिया, निश्चित ही वह विश्व के समस्त मानव कल्याण का एक श्रेष्ठतम सुगम पथ है।

– मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित
स्वाध्याय प्रेमियों के लिए
365 वेद मन्त्रों का अभूतपूर्व संग्रह : प्रतिदिन एक मन्त्र का हृदय से पाठ करें
वैदिक विनय
20% छूट के साथ मात्र 125/– रुपये में

प्रेरक पुण्य स्मरण

वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति के प्रकाण्ड विद्वान् : आचार्य राजवीर शास्त्री

- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति-साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित, प्रसिद्ध वैयाकरण, उच्चकोटि के विचारक एवं सिद्ध हस्त लेखक परम् आदरणीय श्री राजवीर शास्त्री जी नहीं रहे। **आज बृहस्पतिवार, दिनांक 25 सितम्बर, 2014 को प्रात: उनका मोदीनगर, उत्तर प्रदेश में काफी समय से रूग्ण रहने के बाद निधन हो गया।** पण्डितजी का जन्म उत्तर प्रदेश गाजियाबाद मण्डल के ग्राम फजलगढ़ के एक आर्य परिवार में, पिता श्री शिवचरण दास एवं माता श्रीमती मनसा देवी के गृह में दिनांक: 4 अप्रैल सन् 1938 को हुआ था। इस समय उनकी आयु 76 वर्षो की थी।

पं. राजवीर शास्त्री की प्रारम्भिक शिक्षा अपने जन्म स्थान के एक ग्रामीण विद्यालय में सम्पन्न हुई थी। इसके पश्चात् आपको वेदार्थ विद्या के अध्ययन हेतु सन् 1946 में गुरूकुल बुकलाना, मेरठ (उत्तर प्रदेश) में प्रविष्ट कराया गया। वहां से कुछ समय के बाद आप वेद विद्यालय गुरूकुल, गौतमनगर, नई दिल्ली में अध्ययनार्थ आये। आपके पिता श्री भी ईसी संस्था में सेवारत थे। आपकी कुशाग्र बुद्धि को देखते हुए कुछ समय के पश्चात् आपको वैदिक-धर्म-ध्वज-वाहक, प्रसिद्ध ऐतिह्यविद् पूज्यपाद आचार्य भगवानदेव जी (स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती) द्वारा संचालित गुरूकुल महाविद्यालय, झज्जर में प्रविष्ट किया गया जहां आपने पूरे मनोयोग से सन् 1954 तक वेद-वेदांगों का गहन अध्ययन किया। इस काल में परीक्षा न देकर विद्वता उपार्जन हेतु आपने परम्परागत अध्ययन किया था।

इसके पश्चात् आपने समसामयिक परिस्थिति एवं आवश्यकता के अनुसार पंजाब विश्वविद्यालय में विधिवत परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए विशारद, शास्त्री तथा प्रभाकर की उपाधियां प्राप्त की। इस प्रकार परम्परागत अधीत शास्त्र तथा आधुनिक परीक्षा प्रणाली दोनों में परिपूर्ण होने पर आपने सन् 1958 से 1960 तक गुरूकुल झज्जर में अध्यापन कार्य किया। आप पंजाब के शिक्षा विभाग में सन् 1960 से 1967 तक संस्कृत अध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। वाराणसेय संस्कृत विश्व विद्यालय से आचार्य तथा मेरठ विश्व विद्यालय से एम.ए. संस्कृत की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपने ग्राम बैरी, जिला झज्जर (हरियाणा) में शासकीय विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हुए आर्ष ग्रन्थों के अध्यापन हेतु अतिरिक्त समय निकालकर आचार्य बलदेव जी एवं इन्द्रदेव मेधार्थी को व्याकरण महाभाष्य आदि पढ़ाया। तदुपरान्त आप सन् 1967 से दिल्ली प्रशासन में संस्कृत शिक्षक का कार्य करते हुए सन् 1998 में सेवानिवृत्त हुए। आप व्याकरण शास्त्र के तलस्पर्शी विद्वान् श्री विश्वप्रिय जी के योग्यतम शिष्य रहे हैं। आपको अनेक संस्थाओं ने व्याकरण अध्यापनार्थ आमन्त्रित करके ज्ञानार्जन किया जिनमें कन्या गुरूकुल नरेला, गुरूकुल गौतमनगर, दिल्ली एवं गुरूकुल पौंधा, देहरादून मुख्य हैं।

आपकी विद्वता चतुर्दिक् फैली है। आपकी निर्बाध लेखनी से अनेक ग्रन्थों का लेखन एवं सम्पादन हुआ है, जिनमें योगदर्शन-भाष्यम्, वैदिक शब्दकोष, उपनिषद्भाष्य, आदि ग्रन्थों का लेखन तथा आर्य जगत् की प्रसिद्ध पत्रिका ''दयानन्द सन्देश'' का सम्पादन हुआ है, जिसके सृष्टि संवत्, वैदिक मनोविज्ञान, मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण एवं सत्यार्थ प्रकाश आदि विशेषांक अति प्रशंसनीय हैं।

आपकी विद्वता एवं विशिष्ट कार्य को देखते हुए अनेक प्रसिद्ध संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया है जिसमें सन् 2000 में विक्रम प्रतिष्ठान संयुक्त राज्य अमेरिका, सन् 2002 में आर्य समाज सान्ताक्रूज, मुम्बई, सन् 2007 में गुरूकुल झज्जर द्वारा स्वामी ओमानन्द स्मृति पुरस्कार तथा मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा प्रदत्त सम्मान प्रमुख हैं।

यद्यपि पं. राजवीर शास्त्री अब हमारे मध्य में नहीं हैं तथापि उन्होंने महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए निष्काम भाव से जो पुरूषार्थ व साहित्य साधना की है उससे युग-युगान्तरों तक वैदिक धर्म प्रेमी लोग प्रेरणा ग्रहण कर लाभान्वित होते रहेंगे और महर्षि दयानन्द और पंण्डित राजवीर शास्त्री जी के स्वप्नों को साकार करेंगे। हम उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि प्रस्तुत करते हैं और उनके परिवार के प्रति अपनी सहानुभूति एवं संवेदना व्यक्त करते हैं। ईश्वर दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति और मोक्ष प्रदान करें, यह प्रार्थना है।

प्रथम पृष्ठ का शेष

जी (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य (तपोवन साधना आश्रम देहरादून), डॉ सोमदेव जी शास्त्री (मुंबई) डॉ. सुभाष जी वेदालंकार (जयपुर), आचार्य धनञ्जय जी (गुरुकुल पौंधा देहरादून), डॉ बलवीर आचार्य (रोहतक), श्री अमर ऐरी (टोरोन्टो), डॉ. देवबाला रामनाथन (न्यूयॉर्क), डॉ. दीनबंधु चन्दोरा (अटलांटा), डॉ सूर्य नारायण नन्दा (हूस्टन), डॉ सुधीर आनन्द (केलिफोर्निया) इत्यादि।

इस आर्य महा सम्मेलन के अवसरपर, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की नयी कार्यकारी समिति नियुक्ति की गयी। प्रसन्नता की बात यह है कि विश्व की सभी आर्य प्रतिनिधि सभाओं में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका की कार्यकारी समिति के सदस्य बसे युवा हैं। २०१४-२०१६ के लिए, सर्व सम्मति से, प्रधान - श्री विजय भल्ला, उप-प्रधान - श्री विश्रुत आर्य, सभा मंत्री - श्री भुवनेश खोसला, और कोषाध्यक्ष श्री जथिन्दर अब्बी मनोनीत किये गए। मनोनयन के बाद नयी कार्यकारिणी ने सभा के एवं आर्यसमाज के कार्यों को पूरे मनोयोग से आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया

इस आर्य महा सम्मेलन की सफलता का मुख्य श्रेय न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, और कनेक्टिकट (ट्राई-स्टेट एरिया) की आर्यसमाज संस्थाओं को जाता है। सभा प्रधान डॉ. रमेश गुप्ता एवं महामंत्री श्री विश्रुत आर्य के नेतृत्व में इस सम्मेलन द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के महत्पूर्ण इतिहास में एक सुनहरा पृष्ठ लिखा गया। सम्मेलन के अंत में श्री विश्रुत आर्य ने प्रधान डॉ. रमेश जी गुप्ता के नेतृत्व की भूरिभूरि सराहना की और उनको इस आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। समापन सत्र का संचालन सभा के समर्पित युवा कर्णधार, श्री भुवनेश खोसला (वर्तमान महामंत्री) एवं श्री विजय भल्ला (वर्तमान प्रधान) ने किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका का पच्चीसवां आर्य महासम्मेलन जुलाई, ३१ - अगस्त, ३, २०१५ हूस्टन, टेक्सास में होगा। - ***डॉ. रमेश गुप्ता, प्रधान***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर-बैंकॉक

सिंगापुर 1-2 नवम्बर एवं बैंकॉक 8-9 नवम्बर 2014

केवल सिंगापुर सम्मेलन में भाग लेने वाले आर्यजन ध्यान दें

केवल सिंगापुर सम्मेलन में जाने के लिये उत्सुक आर्यजनों के विशेष अनुरोध पर उनके लिये ₹68500/- का एक सप्ताह का एक विशेष कार्यक्रम बनाया गया है जिसमें 4 सितारा होटल का 5 रात्रि का खर्च, दोनों ओर का हवाई जहाज का किराया, वीजा फीस, इन्श्योरेन्स, ब्रेकफास्ट, लंच, डिनर तथा सिंगापुर के सभी दर्शनीय स्थलों का ए.सी. कोच में भ्रमण शामिल है। सीटें बहुत ही कम हैं। कृपया शीघ्र ही 09824072509 पर बाजा संयोजक अग्रवाल श्री सुरेशचन्द्र आर्य से सम्पर्क करें।

- सम्पादक

महाशय धर्मपाल से मिला आर्यसमाज का शिष्ट मण्डल

कोटा, 26 सितम्बर। आर्य समाज जिला सभा कोटा के तीन सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने महाशय धर्मपाल आर्य के साथ दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की।

अरविन्द पाण्डेय प्रचार व कार्यालय सचिव जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के नेतृत्व में वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री तथा प्रभुसिंह कुशवाह मंत्री वेद प्रचार समिति कोटा महाशय धर्मपाल से उनके निवास पर मिले तथा उन्हें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर एमडीएच वेद अनुसंधान केन्द्र 'वेदाश्रम' कोझिक्कोड केरल के शिलान्यास समारोह का स्मृति चित्र संग्रह भेंट किया।

इस शिष्टाचार भेंट में अरविन्द पाण्डेय ने उन्हें आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा आर्य समाज के वेदप्रचार तथा सामाजिक सेवा के लिए किये जा रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी दी तथा कोटा आने का निमंत्रण दिया। स्मृतिचिन्ह एलबम की सराहना करते हुए उन्होंने आर्य समाज कोटा के कार्यों पर संतोष व्यक्त किया तथा कहा कि प्रत्येक कार्य को निष्ठापूर्वक करो, जनजन को महर्षि दयानन्द तथा वेद के सिद्धांतों से अवगत कराओ।

एमडीएच प्रमुख महाशय धर्मपाल आर्य के साथ इस शिष्टाचार भेंट में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री विनय आर्य भी उपस्थित थे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर साहित्य प्रचार

तिरुवनन्तपुरम् पुस्तक मेला

स्थान : पुथारीकंडम मैदान, तिरुवनन्तपुरम् (केरल)

4 से 12 अक्तूबर, 2014 : प्रात : 11 बजे

दक्षिण भारत आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करें तथा अधिकाधिक संख्या में जन सामान्य को पुस्तक मेले में सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से

9वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन इन्दौर में सम्पन्न

ये सम्मेलन आर्य समाज के क्रांतिकारी कदम - प्रकाश आर्य

इंदौर, 28 सितम्बर। इंदौर में आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन 28 सितम्बर को आर्य समाज महर्षि दयानन्दगंज में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रकाश आर्य (मंत्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली व मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा) ने उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन आर्य समाज का क्रांतिकारी कदम है। उन्होंने कहा कि जातिगत आधार के स्थान पर गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल विवाह ही सुखी गृहस्थ की रीढ़ है। महर्षि दयानन्द के इस संदेश का पालन करके ही परिवार वैदिकधर्मी व सुखी हो सकते हैं।

रामप्रसाद याज्ञिक ने बताया कि कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रीय संयोजक अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन के प्रति आर्य परिवारों का रूझान बढ़ा है। यही कारण है कि अब तक हुए आठ परिचय सम्मेलनों के माध्यम से 400 से अधिक रिश्ते हो चुके हैं। इंदौर में यह दूसरा परिचय सम्मेलन था तथा राष्ट्रीय स्तर पर 9वां सम्मेलन आज सम्पन्न हुआ।

श्री चड्ढा ने बताया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्य परिवार युवक- युवती परिचय सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। **आगामी परिचय सम्मेलन गुजरात के आणंद नगर में 23 नवम्बर 2014, रविवार को आयोजित किया जाएगा।**

विशिष्ट अतिथि मध्यभारत आर्य परिवार युवक- युवती परिचय सम्मेलन के संयोजक डॉ. दक्षदेव गौड़ ने कहा कि आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक मान्यताओं के आधार पर आयोजित किये जा रहे हैं, जो नींव का पत्थर साबित होगा व युवाओं को आर्य विचारधारा से जोड़ने का सशक्त माध्यम होगा।

कार्यक्रम में उपस्थित उम्मीदवार युवक-युवतियों ने मंच पर आकर उत्साह व आत्म विश्वास के साथ अपना अपना परिचय दिया। कुछ अभिभावकों न अपने पुत्र-पुत्रियों का परिचय दिया। युवतियों ने कहा कि आर्य परिवारों में हम पली बड़ी हैं अत: जीवनसाथी भी आर्य परिवार का हो तो गृहस्थ जीवन आनंदित रहता है। आर्य परिवार युवक-युवती परिचय सम्मेलन में आकर हमें अच्छा लगा।

युवकों ने कहा कि ऐसे आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन देश के अन्य प्रांतों में भी आयोजित होने से इसका दायरा बढ़ेगा व आर्य संस्कारों वाला जीवन साथी खोजना आसान हो जावेगा।

कार्यक्रम प्रभारी व आर्य समाज महर्षि दयानंद गंज के संयोजक दिनेश गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन आयोजित करने का दायित्व हमें दिया गया।

कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न काउंटर विशेषकर पूछताछ, रजिस्ट्रेशन, पुस्तिका वितरण, बेज वितरण तथा तत्काल रजिस्ट्रेशन लगाए गए थे। जिसमें श्रीमती शिखा गुप्ता, कु. श्रुति गुप्ता, श्रीमती विमला गौड़, श्रीमती रेणु गुप्ता, श्रीमती सपना सोनी, श्रीमती अनिता गुप्ता, श्रीमती शशि गुप्ता विभिन्न काउंटरों पर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन कर रही थी तथा युवा कार्यकर्त्ता शरद यादव, प्रकाश चौधरी, आशीष उपाध्याय, मोहनसिंह आर्य, बालाराम आर्य, अरूण गुप्ता, धर्मेन्द्र शास्त्री, सुरेश आर्य व्यवस्था संभाल रहे थे।

आर्य समाज के सदस्य डॉ. अखिलेशचंद शर्मा ने बताया कि उपस्थित सभी के लिये चाय-नाश्ता व भोजन की व्यवस्था तथा बाहर से पधारे अतिथियों के लिए आवास की व्यवस्था आर्य समाज महर्षि दयानन्दगंज द्वारा नि:शुल्क की गई थी। संभागीय उपप्रधान गोविन्द आर्य ने सभी उपस्थितजनों व आयोजकों का आभार व्यक्त किया। - ***अर्जुनदेव चड्ढा***
राष्ट्रीय संयोजक, मो. 09414187428

9वें आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन में भाग लेने वाले युवक-युवती अपना परिचय देते हुए तथा परिजन आपसी मेल-मिलाप करते हुए।

परिचय सम्मेलन में उपस्थित प्रतिभागियों के साथ सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रकाश आर्य, राष्ट्रीय सोजक श्री अर्जुन देव चड्ढा एवं प्रान्तीय सभा के अधिकारीगण।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' सम्मान

सामाजिक एवं औद्योगिक संस्था '**देव विमल हर्बल हैरिटेज एण्ड एजुकेशनल सोसायटी**' देहरादून की ओर से एक भव्य अलंकरण समारोह में 14 सितम्बर, 2014 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार को '**उत्तराखण्ड गौरव**' के सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ० सुरेन्द्र कुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने के फलस्वरूप दिया गया।

इससे पूर्व इन्हें 'ऑल इंडिया कांफ्रेस ऑफ इंटलेक्च्वल सोसायटी, दिल्ली' की ओर से 'उत्तराखण्ड रत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया था।

- **डॉ. प्रदीप जोशी, जनसूचना अधिकारी**, गुरुकुल कांगड़ी वि.वि., हरिद्वार

प्रथम पृष्ठ का शेष

नवरात्र पर्व का वास्तविक ....

कृ०/अमावस्या के पश्चात् ऋषि-मुनि पुनः अरण्य की ओर लौट जाते थे। और चार माह तक नगर-ग्राम में रहकर खान-पान के माध्यम से जो अनियमतता रहती थी, उसको स्वस्थ रखने के लिए ऋषि-मुनि विद्वान् सप्ताह एवं पक्ष तक उपवास करके शरीर शुद्धि कर पुनः योगाभ्यास में परिणत हो जाते थे। किसान खेतों की ओर लौट जाते थे क्योंकि नवधान आदि अन्न पक जाता है, अतः घर में नये अन्न की तैयारी में जुट जाते थे, वैश्य अपने व्यापार हेतु यात्राओं पर निकल जाते थे। तथा क्षत्रिय वर्षाकाल समाप्त होने पर अपनी सेना को पुनः संगठित एवं नियमित करने लग जाते और युद्ध की तैयारी में सज्ज हो जाते थे। इस प्रकार से वास्तव में नवरात्र भक्ति पूजा नौ दिन की नहीं यह तो जीवन का एक अंग होना चाहिए। ईश्वर उपासना, यज्ञ एवं योग जैसी क्रियाएँ दैनिक जीवन का अंश होनी चाहिए। और यह रूढ़िवाद की परम्परा नष्ट होनी चाहिए तभी मानव जीवन सरल सुन्दर एवं स्वर्ग बन जाएगा।

द्वितीय यह कि- नौ दिवस में भगवती देवी (पार्वती) के नौ रूपों की पूजा की जाती है। लेकिन हे भद्रपुरूषों वैदिक शब्दकोश में पार्वती 'प्रकृति' को कहा जाता है, और भगवती दुर्गा भी इसी के पर्याय हैं तथा शिव नाम ईश्वर का। जब ईश्वर की प्रेरणा से इस प्रकृति में जो सत्व रज तम की आभा है वह क्रिया में आ जाती है। और यह प्रकृति (माता पार्वती) भिन्न-भिन्न रूपों में संसार में सृष्टि रूप में प्रकट हो जाती है। सत्यार्थ प्रकाश के आठवें सम्मुलास में महर्षि दयानन्द लिखते है कि- **"जब कोई किसी पदार्थ को देखता है तो दो प्रकार का ज्ञान उत्पन्न होता है एक जैसा वह पदार्थ है दूसरा उनमें रचना देखकर बनाने वाले का ज्ञान है"** अतः प्रकृति के विभिन्न रुपों में हमें ईश्वर की विशिष्ट कारीगरी का स्मरण करना चाहिए, उसको सर्वत्र मानकर उसकी सार्वभौमिकता का सार प्राप्त होता है न कि विभिन्न नामों से विभिन्न कल्पानाएं कर उपासना पद्धति को विकृत करें। वैदिक शब्दकोश में पर्यायवाची शब्दों की पर्याप्त प्रचूरता है। अतः दुर्गा जो 'आत्मा' को भी कहा जाता है क्योंकि इस प्रकृति प्रदत्त शरीर (दुर्ग) में यह विराजमान हो जाता है। वेद कहता है- **"अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पुरोऽयोध्या"**- अर्थात् इस शरीर को देवों की पुरी (नगरी) कहा है। इसमें 33 देव विद्यमान होते हैं। यह आठ चक्र और नौ द्वार वाली देवों की नगरी है। इसलिए योगी महा पुरूष इस ऋतु परिवर्तन के साथ शरीर को नौ द्वारो के माध्यम से शुद्ध एवं पवित्र कर योगाभ्यास को सिद्ध करते है आत्मा का परमात्मा से तभी संयोग होता है, न कि कुछ दिन भूखे रहकर और यह आत्मा ऐसे दुर्ग में बैठा है जिसमें आठचक्र और नव द्वार है, जिसको वेद ने अयोध्या कहा है। प्रथम शैलपुत्री से सिद्धिदात्री तक की कल्पना मात्र है। क्योंकि शैल पृथ्वी का भाग है जिसका सम्बन्ध मूलाधार चक्र से होता है नवी सिद्धीदात्री जिसका सम्बन्ध सहस्रार चक्र से होता है, अर्थात् मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि, हृदय, कण्ठ, घ्राण, आज्ञा और सहस्रार चक्र को प्राप्त कर आत्मा परम सिद्धि (अपने सनातन पिता ईश्वर) को प्राप्त हो जाती है, यह आत्मा रूपी देवी नव द्वारों के शोधन और आठ चक्रों के माध्यम से एकाक्षर ब्रह्म (शिव) से मिलन कर लेती है। जिसको योग दर्शन में महर्षि पतन्जलि ने अष्टाङ्ग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) के नाम से प्रकाशित किया है। जब अष्टाङ्ग योग का समन्वय अष्ट चक्रों में हो जाता है तो आत्मा नौ द्वारों को पार कर ब्रह्मरन्ध्र के माध्यम से प्रयाण कर आवागमन के बन्धन से छूट जाता है यही नवरात्रों का वैदिक विधान तथा वास्तविक स्वरूप है जो प्रत्येक मानव के लिए प्रत्येक काल में करना अपेक्षित है।

पृष्ठ 2 का शेष

सब गड़बड़ झाला.....

कभी ब्राह्मण हो सकती हैं?

उत्तर- बहुत से हो गये हैं, होते हैं और होंगे भी। जैसे छान्दोग्योपनिषद 4/4 में जाबाल ऋषि अज्ञात कुल से, महाभारत में विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण से और मतंग चांडाल कुल से ब्राह्मण हो गये थे। अब भी जो उत्तम विद्या, स्वाभाव वाला हैं, वही ब्राह्मण के योग्य हैं और मुर्ख (गुण रहित) शुद्र के योग्य हैं। स्वामी दयानंद कहते हैं कि ब्राह्मण का शरीर (मनु 2/28 के अनुसार) रज वीर्य से नहीं होता हैं। स्वाध्याय, जप, नाना विधि होम के अनुष्ठान, सम्पूर्ण वेदों को पढ़ने-पढ़ाने, इष्टि आदि यज्ञों के करने, धर्म से संतान उत्पत्ति मंत्र, महायज्ञ अग्निहोत्र आदि, विद्वानों के संग, सत्कार, सत्य भाषण, परोपकार आदि सत्कर्म, दुष्टाचार छोड़श्रेष्ठ आचार में वर्तने से ब्राह्मण का शरीर किया जाता हैं। रज वीर्य से वर्ण व्यवस्था मानने वाले सोचे कि जिसका पिता श्रेष्ठ उसका पुत्र दुष्ट और जिसका पुत्र श्रेष्ठ उसका पिता दुष्ट और कही कही दोनों श्रेष्ठ व दोनों दुष्ट देखने में आते हैं। जो लोग गुण, कर्म, स्वभाव से वर्ण व्यवस्था न मानकर रज वीर्य से वर्ण व्यवस्था मानते हैं उनसे पूछना चाहिये कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच, अन्त्यज्य अथवा कृष्टयन, मुसलमान हो गया हैं उसको भी ब्राह्मण क्यूँ नहीं मानते? इस पर यही कहेगे कि उसने ब्राह्मण के कर्म छोड़ दिये इसलिये वह ब्राह्मण नहीं है। इससे यह भी सिद्ध होता हैं कि जो ब्राह्मण आदि उत्तम कर्म करते हैं वही ब्राह्मण और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण, कर्म स्वाभाव वाला होवे, तो उसको भी उत्तम वर्ण में, और जो उत्तम वर्णस्थ हो के नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिये।

सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास में स्वामी दयानंद लिखते हैं श्रेष्ठों का नाम आर्य, विद्वान्, देव और दुष्टों के दस्यु अर्थात डाकू, मुर्ख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। आर्यो में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र चार भेद हुए। मनु स्मृति के अनुसार जो शुद्र कुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य गुण, कर्म स्वभाव वाला हो तो वह शुद्र ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हो जाये। वैसे ही जो ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण, कर्म स्वभाव शुद्र के सदृश्य हो तो वह शुद्र हो जाये। वैसे क्षत्रिय वा वैश्य के कुल में उत्पन्न होकर ब्राह्मण, ब्राह्मणी वा शुद्र के समान होने से ब्राह्मण वा शुद्र भी हो जाता है। अर्थात चारों वर्णो में जिस जिस वर्ण के सदृश्य जो जो पुरुष वह स्त्री हो वह वह उसी वर्ण में गिना जावे।

आपस्तम्भ सूत्र 2/5/1/1 का प्रमाण देते हुए स्वामी दयानंद कहते हैं 'धर्माचरण से निकृष्ट वर्ण अपने से उत्तम उत्तम वर्णो को प्राप्त होता हैं, और वह उसी वर्ण में गिना जावे, कि जिस जिस के योग्य होवे। वैसे ही अधर्माचरण से पूर्व पूर्व अर्थात् उत्तम उत्तम वर्ण वाला मनुष्य अपने से नीचे-नीचे वाले वर्णो को प्राप्त होता हैं, और उसी वर्ण में गिना जावे।' स्वामी दयानंद जातिवाद के प्रबल विरोधी और वर्ण व्यवस्था के प्रबल समर्थक थे। वेदों में शूद्रों के पठन पाठन के अधिकार एवं साथ बैठ कर खान पान आदि करने के लिए उन्होंने विशेष प्रयास किये थे। स्वामी दयानंद का वैदिक चिंतन इस विषय में मार्गदर्शन करने वाली क्रांतिकारी सोच हैं। वेदों में 'शूद्र' शब्द लगभग बीस बार आया है। कही भी उसका अपमानजनक अर्थो में प्रयोग नहीं हुआ है और वेदों में किसी भी स्थान पर शूद्र के जन्म से अछूत होने,उन्हें वेदाध्ययन से वंचित रखने, अन्य वर्णो से उनका दर्जा कम होने या उन्हें यज्ञादि से अलग रखने का उल्लेख नहीं है।

हे मनुष्यों! जैसे मैं परमात्मा सबका कल्याण करने वाली ऋग्वेद आदि रूप वाणी का सब जनों के लिए उपदेश कर रहा हूँ, जैसे मैं इस वाणी का ब्राह्मण और क्षत्रियों के लिए उपदेश कर रहा हूँ, शूद्रों और वैश्यों के लिए जैसे मैं इसका उपदेश कर रहा हूँ और जिन्हें तुम अपना आत्मीय समझते हो , उन सबके लिए इसका उपदेश कर रहा हूँ और जिसे 'अरण' अर्थात पराया समझते हो, उसके लिए भी मैं इसका उपदेश कर रहा हूँ, वैसे ही तुम भी आगे आगे सब लोगों के लिए इस वाणी के उपदेश का क्रम चलता रहे। (यजुर्वेद 26/2)

प्रार्थना हैं की हे परमात्मा! आप मुझे ब्राह्मण का, क्षत्रियों का, शूद्रों का और वैश्यों का प्यारा बना दें।इस मंत्र का भावार्थ ये हैं की हे परमात्मा आप मेरा स्वाभाव और आचरण ऐसा बन जाये जिसके कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र और वैश्य सभी मुझे प्यार करें। (अथर्ववेद 19/62/1)

हे परमात्मन आप हमारी रुचि ब्राह्मणों के प्रति उत्पन्न कीजिये, क्षत्रियों के प्रति उत्पन्न कीजिये, वैश्यों के प्रति उत्पन्न कीजिये और शूद्रों के प्रति उत्पन्न कीजिये। मंत्र का भाव यह है कि हे परमात्मन! आपकी कृपा से हमारा स्वाभाव और मन ऐसा हो जाये की ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र सभी वर्णो के लोगों के प्रति हमारी रूचि हो। सभी वर्णो के लोग हमें अच्छे लगें, सभी वर्णो के लोगों के प्रति हमारा बर्ताव सदा प्रेम और प्रीति का रहे। (यजुर्वेद 18/46)

हे शत्रु विदारक परमेश्वर मुझको ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए, वैश्य के लिए, शुद्र के लिए और जिसके लिए हम चाह सकते हैं और प्रत्येक विविध प्रकार देखने वाले पुरुष के लिए प्रिय करे। (अथर्ववेद 19/32/8)

इस प्रकार वेद की शिक्षा में शूद्रों के प्रति भी सदा ही प्रेम-प्रीति का व्यवहार करने और उन्हें अपना ही अंग समझने की बात कही गयी हैं।

वेदों में शूद्रों को आर्य बताया गया हैं इसलिए उन्हें अछूत समझने का प्रश्न ही नहीं उठता हैं। वेदादि शास्त्रों के प्रमाण से सिद्ध होता है कि ब्राह्मण वर्ग से लेकर शुद्र वर्ग आपस में एक साथ अन्न ग्रहण करने से परहेज नहीं करते थे। वेदों में स्पष्ट रूप से एक साथ भोजन करने का आदेश हैं।

हे मित्रों तुम और हम सब मिलकर बलवर्धक और सुगंध युक्त अन्न को खाये अर्थात सहभोज करे। (ऋग्वेद 9/98/12)

हे मनुष्यों तुम्हारे पानी पीने के स्थान और तुम्हारा अन्न सेवन अथवा खान पान का स्थान एक साथ हो। (अथर्ववेद 6/30/6)

वेदों में शुद्र को अत्यंत परिश्रमी कहा गया हैं। यजुर्वेद 30/5 में आता हैं 'तपसे शूद्रं' अर्थात् श्रम और मेहनत से अन्न आदि को उत्पन्न करने वाला तथा शिल्प आदि कठिन कार्य आदि का अनुष्ठान करने वाला शुद्र हैं। तप शब्द का प्रयोग अनंत सामर्थ्य से जगत् के सभी पदार्थो कि रचना करने वाले ईश्वर के लिए वेद मंत्र में हुआ हैं।

ऋग्वेद 5/60/5 में आता हैं कि मनुष्यों में न कोई बड़ा है, न कोई छोटा हैं। सभी आपस में एक समान बराबर के भाई हैं। सभी मिलकर लौकिक एवं पारलौकिक सुख एवं ऐश्वर्य कि प्राप्ति करे।

इस प्रकार से स्वामी दयानंद की वैदिक विचारधारा को मानने से, प्रक्षिप्त मनुस्मृति के त्याग से, जातिवाद के स्थान पर वर्ण व्यवस्था को सुचारू रूप से लागु करने से ही हिन्दू समाज में एकता संभव हैं। मुस्लिम आक्रमणकारियों की देन बताकर जातिवाद का विनाश करने की कल्पना अपरिपक्व सोच है। आशा है मेरे इस लेख के आशय को समझकर मानवता पर जातिवाद के रूप में अत्याचार के विरुद्ध सभी सार्थक पहल करेंगे तभी इस जातिवादी दानव का नाश होगा। *-डॉ. विवेक आर्य*

आवश्यकता है

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को विभिन्न विषयों पर लेख लिखने एवं सम्पादन कार्य में रूचि रखने वाले आर्य युवा लेखकों की आवश्यकता है। गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त विद्वानों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक महानुभाव अपने बायोडाटा ईमेल/डाक द्वारा भेजें।

महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15- हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
ईमेल : aryasabha@yahoo.com

आर्यसमाज वसुन्धरा, गाजियाबाद के तत्त्वावधान में

आध्यात्मिक दिव्य सत्संग एवं सामवेद ब्रह्म पारायण यज्ञ

7 से 12 अक्टूबर, 2014

स्थान : अटल चौक, सै.13, वसुन्धरा

यज्ञ : प्रातः 7 से 10 बजे

ब्रह्मा एवं प्रवचन - ब्र. राजसिंह आर्य

संगीत - देवेन्द्र कुमार आर्य

यज्ञ पूर्णाहुति व समापन : 12 अक्तूबर

प्रातः 7 बजे से 2:15 बजे

- वेद प्रकाश आर्य, संयोजक

सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर
17 वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव
के अवसर पर
अखिल भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद का वार्षिक सम्मेलन एवं वयोवृद्ध भजनोपदेशक सम्मान समारोह
11-12 अक्टूबर 2014

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- अशोक आर्य, का. अध्यक्ष

परोपकारिणी सभा के तत्वाधान में
139वाँ ऋषि बलिदान समारोह
31 अक्टूबर से 2 नवम्बर 2014

ऋग्वेद पारायण यज्ञ
ब्रह्मा : डॉ. वागीश (मुम्बई)
चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण वेद प्रतियोगिता
वेदगोष्ठी एवं सम्मान समारोह
तथ योग साधना शिविर

आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

- गजानन्द आर्य, प्रधान

शिवपुरी मध्यप्रदेश के आर्यों द्वारा
"आर्य जन संसद" का गठन

आर्यसमाज शिवपुरी (मध्य प्रदेश) के उत्साही आर्य युवकों ने जन चेतना के लिए **आर्य जन संसद** का विधिवत् गठन किया। जिसके माध्यम से तीन दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें आचार्य आनन्द पुरुषार्थी ने "पारिवारिक सामंजस्य एवं नैतिक उत्तरदायित्व" विषयों पर प्रकाश डाला और हम दो हमारे दो की संकीर्ण भावना से ऊपर उठकर पंचमहायज्ञों के माध्यम से गृहस्थ को स्वर्ग बनायें। इस कार्यक्रम में 20 मुस्लिम बच्चों ने भी भाग लिया। प्रसिद्ध सितार वादिका श्रीमती स्नेहलता सिंघल मुख्य अतिथि रहे। राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त जेल अधीक्षक श्री बी. एस. मौर्य जी और सी.बी.आई. के वरिष्ठ अधिकारी व 300 कैदी इस आयोजन में उपस्थित रहे। यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि आर्य युवकों के द्वारा एक नये मंच से आर्य विचारधाराओं को प्रसारित करने का पुरुषार्थ पूर्ण सराहनीय कार्य किया जा रहा है। - ***मन्त्री***

श्रीमद् दयानन्द गुरूकुल संस्कृत विद्यालय गंगीरी अलीगढ़ (उ०प्र०) का
57वाँ वार्षिक महोत्सव

11-12-13 अक्टूबर 2014
यज्ञ एवं वेद कथा : प्रात: 8 से 12 बजे
भजन व प्रवचन : रात्रि 7:30 से 10 बजे
मुख्य अतिथि : आचार्य स्वदेश जी
राजेश दिवाकर (सांसद)

इस अवसर पर अनेक विद्वानों एवं भजनोपदेशकों के भजन एवं प्रवचन होंगे।

- आचार्य मित्रसेन आर्य, संयोजक (9557408565)

विदेश में दूसरी बार
108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

अध्यात्म पथ के संपादक एवं वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में आर्य समाज मारखम टोरंटो के विशाल प्रांगण में दूसरी बार 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। भारी संख्या में उपस्थि श्रोताओं ने बड़ी श्रद्धा से गायत्री के महत्व को समझा और यज्ञ की महिमा को भी आत्मसात् किया। इसी यज्ञ के प्रमुख यज्ञमान श्री प्रफुल्ल लखानी एवं श्रीमती मीना लखानी थे इस महायज्ञ में 250 परिवारों ने यज्ञमान बनकर पुण्य लाभ प्राप्त किया।

- सूर्यकान्त मिश्रा, सह सम्पादक

निराश्रितों के बीच मनाया जन्मदिवस

समाज सेवी एवं आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुन देव चड्ढ़ा ने अपना 71वाँ जन्मदिवस मधुस्मृति संस्थान के निराश्रित बच्चों के बीच मनाया जिसमें बच्चों को उपहार दिये गए बच्चों ने प्रसन्न होकर मामाजी के दीर्घ जीवन की कामना की। आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा में आर्य महिलाओं ने पूर्णिमा वैदिक सत्संग का आयोजन किया जिसमें महिला पूरोहित श्रीमती इन्द्रा पाण्डेय एवं यज्ञमान श्रीमती सकुन्तला आर्या, श्रीमती दीपा दूबे, श्रीमती दीपा रस्तोगी रहे, श्रीमती उमा वशिष्ठ ने प्रभु भक्ति के गीत सुनाये।

- मन्त्री, जिला सभा

आर्य समाज बक्शी नगर-जम्मू में चतुर्वेदशतक एवं गायत्री महायज्ञ

5 से 12 अक्टूबर 2014 यज्ञ-भजन प्रवचन: प्रात: 8-11:30 बजे
ब्रह्म-आचार्य कर्मवीर जी (अजमेर) भजनोपदेशक: संदीप जी एवं हरीश आर्य

- सुभाष गुप्ता, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में
क्षेत्रीय विचार गोष्ठियाँ

पश्चिमी दिल्ली -1 : आर्यसमाज कीर्ति नगर, ए-37 देवेन्द्र मार्ग, नई दिल्ली
5 अक्तूबर, 2014 (रवि) दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री ओम प्रकाश आर्य, मो. 9540077858

पश्चिमी दिल्ली -2 : आर्यसमाज पंखा रोड, 'सी' ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली
12 अक्तूबर, 2014 (रवि) दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री शिव कुमार मदान, मो. 9310474979

दक्षिण दिल्ली : आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली
26 अक्तूबर, 2014 (रवि) दोपहर 2:30 से सायं 7 बजे
संयोजक : श्री राजीव चौधरी, मो. 9810014097

आर्यसमाजों के समस्त अधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं सदस्यों से निवेदन है कि वे अपने क्षेत्रानुसार बैठक में अवश्य ही पधारकर संगठन शक्ति का परिचय दें। कृपया गोष्ठी के उपरान्त प्रीतिभोज अवश्य करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, मो. 9958174441

शोक समाचार

श्री राजबीर शास्त्री जी का देहावसान

आर्यसमाज के परम सहयोगी संस्थान आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के पूर्व प्रधान, दयानन्द सन्देश के सम्पादक एवं वैदिक धर्म-दर्शन-संस्कृति-साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित, प्रसिद्ध वैयाकरण, उच्चकोटि के विचारक, लेखक आचार्य राजवीर शास्त्री जी का बृहस्पतिवार, दिनांक 25 सितम्बर, 2014 की प्रात:काल देहावसान हो गया। वे लगभग 76 वर्ष के थे। उनका अन्तिम संस्कार उसी दिन उनके पैत्रक स्थान मोदी नगर में किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 5 अक्तूबर, 2014 को आर्यसमाज मन्दिर तिहड़ा रोड, मोदीनगर (उ.प्र.) में दोपहर 2 से 4 बजे तक आयोजित की जाएगी।

श्री रघुबर दयाल शर्मा का निधन

आर्यसमाज किदवई नगर नई दिल्ली-23 के सदस्य श्री रघुबर दयाल शर्मा जी का दिनांक 27 सितम्बर, 2014 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 5 अक्तूबर, 2014 को आर्यसमाज किदवई नगर में प्रात: 9 बजे से आयोजित की गई, जिसमें आर्यसमाज के पदाधिकारियों एवं श्री शर्मा जी के परिजनों के साथ सभा के अधिकारियों ने भी पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के तत्त्वावधान में

बाढ़ पीड़ितों हेतु राहत कार्य जारी : स्थान-स्थान से भेजी जा रही है राहत

आप भी अपनी सहयोग राशि अवश्य भेजें : दानदाताओं के नाम आर्यसन्देश में प्रकाशित किए जाएंगे।

दानी महानुभाव/संस्थाएं अपनी दान राशि निम्न बैंक खातों में जमा कराएं

'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 09481000000276 पंजाब एंड सिंध बैंक IFSC - PSIB 0020948

'आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.' खाता सं. 10194249813 भारतीय स्टेट बैंक IFSC - SBIN0001291

विशेष : (1) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के खाते में अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 9540040339 परे सूचित करें तथा aryasabha@yahoo.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें ताकि उन्हें रसीद भेजी जा सके।

(2) **आर्य प्रतिनिधि सभा जे. एंड के.** के खाते में राशि जमा कराने वाले सज्जन कृपया अपनी दान राशि जमा करने के बाद तत्काल मो. 09419133884 पर सूचित करें तथा bharatveena@gmail.com पर डिपोजिट स्लिप ईमेल करें, जिससे उन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर की रसीद भेजी जा सके।

निवेदक

आचार्य बलदेव (प्रधान) प्रकाश आर्य (मन्त्री) भारत भूषण आर्य (प्रधान) रविकान्त आर्य (मन्त्री) योगेश गुप्ता (कोषाध्यक्ष)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर संयोजक, राहत शिविर

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 सितम्बर, 2014 से रविवार 5 अक्तूबर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 2/3 अक्तूबर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 1 अक्तूबर, 2014

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

डॉ. ब्रह्ममुनि जी सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र का साधारण अधिवेशन एवं निर्वाचन गत दिनों सम्पन्न हुआ। निर्वाचन में डॉ. ब्रह्ममुनि जी, प्रधान, श्री माधवराव देशपाण्डे मन्त्री एवं श्री उग्रसेन राठौर जी सर्वसम्मति से कोषाध्यक्ष निर्वाचित घोषित हुए। शेष कार्यकारिणी के गठन के अधिकार प्रधान जी को सौंपे गए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रतिष्ठा में,

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पादों पर

30% की विशेष छूट

आंवला कैंडी	आंवला कैंडी	च्यवनप्राश स्पेशल
(500 ग्राम) ~~160/-~~	(1किलो) ~~294/-~~	(1किलो) ~~286/-~~
110/-रु.	210/-रु.	200/-रु.

इसके अलावा सभी उत्पादों पर 10% की छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।- महामन्त्री

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो? आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो? आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां!

तो जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ना चाहते हैं उसकी ईमेल आईडी लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा। - सम्पादक

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रमाणिक उपन्यास

'मोपला'

अवश्य पढ़ें।

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-

वैदिक प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

दूरभाष: 23360150, 9540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह